6. नई चुनौतियों का मुकाबला करने के लिए वानिकी शिक्षा तथा नीति अनुसन्धान

भारतीय वानिकी अनुसन्धान एवं शिक्षा परिषद् (भा.वा.अ.शि.प.) को विश्वविद्यालयों में वानिकी शिक्षा को बढ़ावा देने हेतु वित्तीय सहायता देने का दायित्व सौंपा गया है ताकि विश्वविद्यालयों में अवसंरचनात्मक सुविधायें जैसे भवन, उपकरण, कम्प्यूटर केन्द्र, पुस्तकालय आदि सुदृढ़ हो सकें। परिषद् द्वारा देश में विभिन्न विश्वविद्यालयों को सहायता अनुदान दिया जाता है और नीति अनुसन्धान के अलावा मानव संसाधन विकास पर कार्य किया जाता है।

6.1. औपचारिक वानिकी शिक्षा और सुधार

भा.वा.अ.शि.प. द्वारा अवसंरचनात्मक विकास, वैज्ञानिक उपकरणों, पुस्तकों की खरीद,, मिस्ट चेम्बरों के निर्माण, विद्यार्थियों के लिए खेल सामग्री की खरीद, संग्रहालयों का निर्माण, वाहनों की खरीद, विद्यार्थियों के दौरे के लिए संवहन उपकरण, कम्प्यूटरों की खरीद, शिक्षण मैनुअल्य, सेमीनारों का आयोजन, प्राध्यापकों का राष्ट्रीय सेमीनारों में भाग लेने तथा विद्यार्थियों के दौरों के लिए विश्वविद्यालयों को अनुदान दिया जाता है, जिससे देश में वानिकी शिक्षा को बढ़ावा मिल सके। परिषद् ने अनुदान के लिए विश्वविद्यालयों से प्रस्ताव मांगे हैं, जिनमें से 19 प्रस्ताव प्राप्त हुये हैं।

6.1.1. व.अ.सं. विश्वविद्यालय

व.अ.सं. (सम) विश्वविद्यालय द्वारा नियमित रूप से निम्नलिखित पाठ्यक्रम चलाये जा रहे हैं :

- वनिकी, पर्यावरण प्रबन्धन, काष्ठ विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी तथा सेल्यूलोज तथा कागज प्रौद्योगिकी में दो वर्ष का एम.एस.सी. कोर्स।
- अरोमा तकनीक में फ्रैगरेन्स तथा फ्लेवर विकास केन्द्र, कन्नौज के सहयोग से एक वर्ष का स्नातकोत्तर डिप्लोमा कोर्स।

व.अ.सं. के विभिन्न प्रभागों द्वारा लेक्चर/शोध–प्रबन्ध/पी.एच.डी. के लिए दिशानिर्देश दिये जाते हैं। इन एम.एस.सी. कोर्सों के लिए आनलाईन प्रवेश परीक्षा ली जाती है। रिपोर्ट की अवधि के दौरान सभी कोर्सों के लिए पाठ्यक्रम संशोधत किये गये हैं।

1. निम्नलिखित विद्याक्षेत्रों के लिए दो चेयर्स ऑफ एक्सीलेन्स अनुबंधित किये गये हैं :
(I) पारिपद्धति तथा जैवविविधता
(II) वन जलवायु परिवर्तन

2. निम्नलिखित शैक्षिक क्रियाकलाप किये गये :
- लेक्चर/प्रैक्टीकल : 632
- शोधलेखों का सुपरविजन : 27
- टर्म पेपर सुपरवाईज्ड : 45
- पी.एच.डी. प्रदान की गई : 64

6.2. विश्वविद्यालयों का प्रत्यायन

परिषद् द्वारा विश्वविद्यालयों को भा.वा.अ.शि.प. से प्रत्यायन के लिए प्रोत्साहित किया जाता है जो पहली बार भा.वा.अ.शि.प. के प्रत्यायन बोर्ड के जरिये होता है, और जिसमें वानिकी शिक्षा में गुणवत्ता सुधार पर ध्यान केन्द्रित किया जाता है। प्रत्यायन प्रक्रिया 18 विश्वविद्यालयों में पूरी की जा चुकी है और प्रमाण–पत्र जारी किये जा चुके हैं। प्रत्यायन के लिए तीन और विश्वविद्यालयों से प्रस्ताव आये हैं, जिन्हें भा.वा.अ.शिप. से प्रत्यायित करने पर विचार किया जा रहा है।

6.3. अनुसन्धान एवं विस्तार के साथ वानिकी शिक्षा का नेटवर्किंग

एन.टी.ई.पी. सेक्टर में समस्याओं और चुनौतियों को देखते हुये भा.वा.अ.शि.प. में भा.वा.शि.प. के संस्थानों और राज्य विश्वविद्यालयों की सहायता से राष्ट्रीय स्तर पर नेटवर्किंग परियोजना की शुरूआत की गई है जिसमें वानिकी संकायों को विश्वविद्यालयों के साथ मिलकर वन

आश्रित समुदायों की शिक्षा एवं अनुसन्धान पर कार्य करने का अवसर मिलेगा। एन.टी.एफ.पी. नेट वर्किंग परियोजना से जुड़े नौ विश्वविद्यालयों से स्टेटस रिपोर्ट तथा विस्तृत परियोजना रिपोर्ट प्राप्त हुई हैं।

6.3.1. सेमीनार/सिम्पोजिया/कार्यशाला/ट्रेनिंग में भागीदारी

करीब 250 वैज्ञानिकों, अधिकारियों तथा कार्मिकों ने विभिन्न सेमीनारों/सिम्पोजिया/कार्यशालाओं/प्रशिक्षणों/बैठकों में भाग लिया जिन्हें देश के विभिन्न संगठनों ने विभिन्न विषयों पर आयोजित किया यथा : आई.पी.सी.सी. ग्रीन हाउस गैस सम्पदासूची, पारिपद्धति पर्यवीक्षण, जैव कम्पोस्टिंग/वर्मीकम्पोस्टिंग, कृषि वानिकी तथा भूमि प्रबन्धन, जलवायु परिवर्तन तथा कार्बन

पंजाब सम्मेलन के दौरान निदेशक, व.अ.सं., जी.सी.आर., व.अ.सं. एवं प्रमुख विस्तार प्रभाग

पंजाब सम्मेलन के दौरान हितधारकों के साथ विचार–विमर्श

न्यूनीकरण, ऊर्जा एवं पर्यावरण, प्रतिस्थापन उपाय के रूप में आजीविका विकास कार्यक्रम, पादप वर्गीकरण, वन प्रमाणन, कृषि वानिकी में औषधीय पादपों की खेती की गुणवत्ता का निर्धारण, सुगंधित तेल पृथक्करण, अभिलक्षण एवं मूल्य वृद्धि, किसानों के लिए कृषि वानिकी तथा भूमि प्रबन्धन, अकाष्ठीय वन उत्पादों की मूल्य वृद्धि, सुगंधित तेलों की गुणवत्ता आकलन, कृषि वानिकी के नाशीकीट और उनके निवारक उपाय, कृषि वानिकी प्रजातियों का विस्तार, आर्थिक सुरक्षा के लिए पॉपलार आधारित कृषि वानिकी की भूमिका, वैधिक सम्पदा प्रबन्धन तथा भा.वा.अ.शि.प. के लिए प्रौद्योगिकी प्रहस्तन नीति, पादप किस्मों का रक्षण तथा किसानों के अधिकार अधिनियम 2001, अजीवी दबाव का प्रत्यारोपण और सहन क्षमता, *कैलोफाईलम इनोफाइलम* के विशेष संदर्भ में वृक्ष उत्पन्न बीज फलियों का प्रहस्तन, वन बीज प्रौद्योगिकी, *कैलोफाईलम इनोफाइलम* की खेती तकनीक, वन संसाधनों की जैवस्थिति, कृषि वानिकी में जैव कीटनाशकों का अनुप्रयोग, एच.वाई.एक्ट, ट्री पाल (एच) तथा ट्री रिच बायो–बूस्टर पेलेट्स के जैव कीटनाशक उत्पाद, जैव प्रौद्योगिकी का नवीनीकरण, जीवन और वृक्ष, कृषि–वानिकी के समाघात में त्वरण, वन नीति, कानून अधिनियम–पर्यावरणीय कानून, बांस उत्पादों के लिए गुणवत्ता सूत्रबद्धीकरण, आर.ई.डी.डी तथा आर.ई.डी.डी + के वानिकी क्षेत्र में हरित भारत मिशन के तहत लाभ, मानव संसाधन विकास, सतत् जीविकोपार्जन के लिए भूमि पुनर्स्थापन तथा जैव विविधता संरक्षण, औषधीय पादपों की खेती, वन नाशीकीटों का जीवविज्ञानकीय नियंत्रण तथा रोगजनक गोलकृमियों की भूमिका, पौधशालाओं तथा रोपणियों में वन नाशीकीटों का प्रबन्धन मुख्य औषधीय पादपों के नाशीकीट और उनका जीवविज्ञानीय नियंत्रण, एकता वृद्धि तथा टकराव प्रबन्धन, साल–छेदक तथा उसका प्रबन्धन, वन प्रमाणीकरण, किसानों के लिए बांस हस्तशिल्प, क्षेत्रीय कर्मी तथा शिल्पकार, ड्रग अवशिष्ट तथा पर्यावरणीय संदूषक, अकाष्ठीय वन उत्पादों की सम्भावनायें प्रक्रमण तथा मूल्य वृद्धि–बांस पुनरूत्पति पर फसल पद्धतियों का समाघात, रोग तथा कीटों की समस्या और बांस में उनका प्रबन्धन, बांस की खेती : जीविकोपार्जन का साधन, फंगल प्रौद्योगिकी के जरिये *एक्वीलेरिया मैलसेन्सिस* में अगर काष्ठ की वृद्धि, ग्रामीण समाजों के लिए विज्ञान एवं तकनीक, वन एवं वन प्रबंधन, वन संरक्षण अधिनियम तथा

नीतियां, पर्यावरणीय समस्यायें, संकटापन्न औषधीय पादप, सतलज नदी घाटी का संयुक्त पर्यावरणीय समाघात आकलन, ऊर्जा के नवीनीकरण योग्य स्रोत, आनुवंशीय इंजीनियरी आदि, जिनके सम्बन्ध में विवरण इस प्रकार है :

क्र.सं.	मुख्यलाय / संस्थान	प्रशिक्षण का नाम	भागीदारों की संख्या	अवधि (दिनों में)
1.	भा.वा.अ.शि.प., देहरादून	2	2	4
2.	व.अ.सं., देहरादून	46	55	267
3.	व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर	20	19	38
4.	का.वि.प्रौ.सं., कोयम्बटूर	14	14	77
5.	उ.व.अ.सं., जबलपुर	43	48	285
6.	शु.व.अ.सं., जोधपुर	10	18	163
7.	व.उ.सं., रांची	15	19	51
8.	व.जै.सं., हैदराबाद	5	5	30
9.	शि.व.अ.सं., शिमला	44	53	78
10.	व.व.अ.सं., जोरहाट	13	13	24
	कुल	212	246	1017

6.3.2. विदेशों के दौरे

वैज्ञानिक संवर्ग को अत्यावश्यक अंतर्राष्ट्रीय परिदृश्य से अवगत कराने के लिए विभिन्न स्रोतों से निधिकरण के साथ 35 विदेशी दौरों के लिए सुविधाएं प्रदान की गई जिन्हे भारत सरकार द्वारा अनुमोदित किया गया।

- डॉ. संगीता गुप्ता ने अतिथि वक्ता के रूप में "भारत में काष्ठ संवृद्धि : भूत, वर्तमान एवं भविष्य, 219वां काष्ठ संवृद्धि सेम्पोजियम", क्वेटो विश्वविद्यालय जापान में दिनांक 18 से 22 फरवरी 2013 तक भाग लिया।
- डॉ. संगीता गुप्ता ने अतिथि वक्ता के रूप में "भारतीय काष्ठ : ऐतिहासिक उपयोग और भविष्य संवहनीयता'' विश्व काष्ठ दिवस सिम्पोजियम में डार एस सलाम, तंजानिया में दिनांक 18 से 22 मार्च 2013 तक भाग लिया।
- डॉ. टी.पी. सिंह, सहायक महानिदेशक (बी.सी.सी.) ने यू.एन.सी.सी.डी. कन्वेंशन क्रियान्वयन समीक्षा समिति के ग्यारहवें सत्र में दिनांक 15 से 19 अप्रैल 2013 तक बॉन जर्मनी में भाग लिया।
- डॉ. एन. कृष्णाकुमार, निदेशक, श्री टी. पी. रघुनाथ, ग्रुप–कोआर्डीनेटर (अनुसन्धान), डॉ. बी. गुरुदेव सिंह, वैज्ञानिक–जी तथा डॉ. ए. नीकोडीमस, वैज्ञानिक–ई, व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर ने "वर्कशाप मीटिंग रेलीवेन्ट टु द इम्प्लीमेंटेशन ऑफ ए.यू.स. ए.आई.डी. एक्टीविटी 60794" में दिनांक 19 से 25 मई तक भाग लिया।
- श्री वी.आर.एस. रावत, वैज्ञानिक–ई, भा.वा.अ.शि.प. ने भारत सरकार के प्रतिनिधिमण्डल के सदस्य के रूप में यू.एन.सी.सी.सी. सब्सीडियरी बार्डी इम्पलीमेन्टेशन एन्ड द सब्सीडियरी बॉड फॉर साइन्टीफिक एन्ड टेक्नोलॉजीकल एडवाईस के अढ़तीसवें सत्र और साथ ही तदर्थ वर्किंग ग्रुप के द्वितीय सत्र के द्वितीय भाग में डर्बन में एन्हेन्स्ड एक्शन इन बॉन में दिनांक 3 से 1 4 जून 2013 तक भाग लिया।
- डॉ. वी.पी. तिवारी, वैज्ञानिकी–जी, का.वि.प्रौ.सं., बैंगलोर 5वें जी.ए.एफ.ओ.आर.एन अन्तर्राष्ट्रीय सिम्पोजियम में "दक्षिण–दक्षिण पूर्वी एशिया तथा सब–सहारा अफ्रीकाः प्रकृति के नजदीक वानिकी पर प्रोत्साहन'' की पर प्रोत्साहन" पर दिनांक 8 से 12 जुलाई 2013 तक केनिया का दौरा किया।
- डॉ. पी. पी. भोजवैद, निदेशक, व.अ.सं., देहरादून द्वारा "पारितंत्रीय विचारधारा के संदर्भ में वन संवृद्धि पर संवाद" पर मुख्य सम्बोधन करने के लिए दिनांक 20 से 21 जुलाई 2013 को चीन का दौरा किया गया।
- डॉ. आर. सुन्दरराज, वैज्ञानिक–जी, का.वि.प्रौ.सं., बैंगलोर द्वारा "गाल प्रोडयूसिंग आरथ्रोपाड्स एन्ड रिलेटेड इन्डोफाईटस के जीवविज्ञान तथा पारिपद्धति पर छठे अन्तर्राष्ट्रीय सेम्पोजियम" में भाग लेने हेतु दिनांक 4 से 8 अगस्त 2013 तक ऑस्ट्रेलिया का दौरा किया।
- डॉ. एन. कृष्णाकुमार, निदेशक, व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर द्वारा "एशिया, प्रशान्त तथा ओसेनिया की क्षेत्रीय कार्यशाला" में भाग लेने हेतु दिनांक 20 से 21 अगस्त 2013 को चीन का दौरा किया गया।
- डॉ. वी. के. वार्ष्णेय, वैज्ञानिक–एफ, व.अ.सं., देहरादून द्वारा 7वीं अन्तर्राष्ट्रीय मेडिकल मशरूम सम्मेलन में भाग लेने हेतु दिनांक 26 से 29 अगस्त 2013 तक चीन का दौरा किया।
- डॉ. आर. के. बोहरा, वैज्ञानिक–ई तथा डॉ. (श्रीमती) पापोरी फुकन बोरपुजारी, अनुसन्धान अधिकारी, व.व. अ.सं., जोरहाट द्वारा "आगर काष्ठ" पर अन्तर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक सेम्पोजियम में भाग लेने हेतु दिनांक 3 से 5 सितम्बर 2013 तक मलेशिया का दौरा किया गया।

- डॉ. विनीत कुमार, वैज्ञानिक – एफ, व.अ.सं., देहरादून द्वारा "ट्रोपेनटेग–13 की संरचना पर डी.ए.ए.डी. एल्यूमी विशेष परियोजना" में भाग लेने हेतु दिनांक 8 से 19 सितम्बर 2013 तक जर्मनी का दौरा किया गया।
- श्री शैवाल दासगुप्ता, उप महानिदेशक (विस्तार), डॉ. टी. पी. सिंह., सहायक महानिदेशक (एफ.सी.सी.) तथा डॉ. आर. एस. रावत, वैज्ञानिक–सी, एफ.सी.सी. प्रभाग, भा.वा.अ.शि.प., देहरादून द्वारा पार्टीज का दूसरा सम्मेलन (सी.ओ.पी.–II), रेगिस्तानीकरण का मुकाबला करने हेतु यूनाइटेड नेशन्स कन्वेंशन बैठक में भाग दिनांक 16 से 27 सितम्बर 2013 तक नामीबिया का दौरा किया गया।
- डॉ. पी. पी. भोजवेद, निदेशक, श्री एम. पी. सिंह, प्रमुख, एफ.सी.सी.आई. प्रभाग तथा श्री जावेद अशरफ, वैज्ञानिक, व.अ.सं., देहरादून द्वारा "सतत् वन प्रबन्धन तथा पुनर्स्थापन संक्रमण" पर अन्तर्राष्ट्रीय सेम्पोजियम में भाग लेने हेतु दिनांक 21 से 23 अक्टूबर 2013 तक चीन का दौरा किया गया।
- डॉ. एन.एस.के.हर्ष, वैज्ञानिक–जी, व.अ.सं., देहरादून द्वारा "फंगल संरक्षण पर तीसरी अन्तर्राष्ट्रीय कांग्रेस" में भाग लेने हेतु दिनांक 11 से 15 नवम्बर 2013 तक तुर्की का दौरा किया गया।
- श्री वी.आर.एस. रावत, वैज्ञानिक–ई, भा.वा.अ.शि.प. द्वारा पार्टीज सम्मेलन के उन्नीसवें सत्र तथा संयुक्त राष्ट्र की जलवायु परिवर्तन अवधारणा के अंतर्गत एस.बी. एस.टी.ए. / एस.बी.आई. के 39वें सत्र में भाग लेने हेतु दिनांक 11 से 22 नवम्बर 2013 तक भारत सरकार के प्रतिनिधि मण्डल के सदस्य के रूप में वारसा (पोलैन्ड) का दौरा किया गया।
- डॉ. रेणु सिंह, सहायक महानिदेशक (शिक्षा तथा पी आर.), भा.वा.अ.शि.प., देहरादून द्वारा "फोरकास्टिंग एन्ड फ्यूचर मॉडलिंग" पर सतत् भू–दृश्य अनुकूलन के तहत दिनांक 2 से 10 दिसम्बर 2013 तक यू.एस.ए. का अध्ययन दौरा किया गया।
- श्री के. ज्यूड. सेकर, महानिदेशक, श्री शैवाल दासगुप्ता, उप महानिदेशक (विस्तार), डॉ. टी. पी. सिंह, सहायक महानिदेशक (एफ.सी.सी.) तथा डॉ. आर. एस. रावत, वैज्ञानिक–सी, भा.वा.अ.शि.प. द्वारा "अन्तर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ ग्रुप बैठक" में भाग लेने हेतु दिनांक 9 से 10 दिसम्बर 2013 तक आई.सी.आई.एम.ओ.डी, काठमाण्डु, नेपाल का दौरा किया गया।

- डॉ. ओमवीर सिंह, वैज्ञानिक–डी, व.अ.सं., देहरादून द्वारा पहली अफ्रीकी अन्तर्राष्ट्रीय एलीलोपैथी कांग्रेस में भाग लेने हेतु दिनांक 6 से 9 फरवरी 2014 तक ट्यूनीशिया का दौरा किया गया।
- मि. जावेद अशरफ, वैज्ञानिक–सी, व.अ.सं., देहरादून द्वारा "एशियाई देशों में सतत् वन प्रबन्धन तथा पुनर्स्थापन संक्रमण" पर सेमीनार में भाग लेने हेतु दिनांक 25 से 26 फरवरी 2014 तक जापान का दौरा किया गया।
- डॉ. मधुमिता दासगुप्ता, वैज्ञानिक–ई, व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर द्वारा आई.टी.टी.ओ. फेलोशिप के तहत प्रशिक्षण के लिए दिनांक 1 मार्च से 30 अप्रैल 2014 तक यू.एस.ए. का दौरा किया गया।
- श्री टी.पी. रघुनाथ, जी.सी.आर, डॉ. बी. गुरूदेव सिंह, वैज्ञानिक–जी तथा डॉ. वी. शिवकुमार, वैज्ञानिक–ई, व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर द्वारा डी.एस.टी. प्रायोजित परियोजना के तहत अध्ययन दौरे के लिए दिनांक 2 से 9 मार्च 2014 तक थाईलैन्ड का दौरा किया गया।
- डॉ. वी. पी. तिवारी, वैज्ञानिक–जी, का.वि.प्रौ.सं., बैंगलोर द्वारा "काम्पलेक्स ग्लोवल संदर्भ में वानिकी तथा वानिकी विज्ञान" अन्तर्राष्ट्रीय कार्यशाला में भाग लेने हेतु दिनांक 16 से 22 मार्च 2014 तक इन्डोनेशिया का दौरा किया गया।
- डॉ. ए. बालू, वैज्ञानिक–जी, डॉ. ए. कार्तिकेयन, वैज्ञानिक–डी, डॉ. एम. हेग्डे, वैज्ञानिक–डी तथा डॉ. ए. शांति, वैज्ञानिक–सी, व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर द्वारा आई.यू.एफ.आर.ओ. अकेशिया 2014 सम्मेलन में भाग लेने हेतु दिनांक 18 से 21 मार्च 2014 तक वियतनाम का दौरा किया गया।

6.4. वैज्ञानिक तथा प्रबन्धन संवर्ग में क्षमता वृद्धि (आयोजित प्रशिक्षण)

वैज्ञानिकों की क्षमता वृद्धि के तहत एच.आर.डी. शुरूआत में रूप में विभिन्न प्रतिष्ठित संस्थानों में छः प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये गये, जिनमें 85 भागीदारों को प्रशिक्षित किया गया। भा.वा.अ.शि.प. के वैज्ञानिकों तथा अनुसन्धान अधिकारियों इत्यादि के लिए नियमित आधार पर अधिष्ठापन कोर्स आयोजित किये गये।

उपर्युक्त के साथ–साथ जैवविविधता और जल सम्भर प्रबन्धन, जलवायु परिवर्तन तथा कार्बन न्यूनीकरण, जलवायु परिवर्तन, वन पारिपद्धति एवं जैवविविधता, भेद्यता तथा अनुकूलन रणनीतियां, किसानों और शिल्पकारों के लिए बांस/रिंगाल हस्तशिल्प, कृषि वानिकी एवं भूमि प्रबन्धन, कृषि वानिकी पद्धतियों का विकास, बांस प्रक्रमण तथा हिमाचल प्रदेश में शिल्पकारों तथा छोटे पैमाने के विनिर्माताओं बांस प्रौद्योगिकी हस्तान्तरण पर शिल्पकारों का प्रशिक्षण, बांस की चटाईयां बुनना और बांस की हस्तनिर्मित सामग्रियां, जैव–कम्पोस्टिंग/वर्मी–कम्पोस्टिंग, रिंगाल, उपयोजन, प्रसार एवं संरक्षण, हरित पट्टिका का विकास पौधशाला एवं रोपण प्रौद्योगिकी, सुधारित बीज एवं पौधशाला प्रौद्योगिकी, वानिकी/वन

जलवायु परिवर्तन कार्बन अल्पीकरण पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

जल संभर प्रबन्धन में जैवविविधता संरक्षण तथा सतत् जीविकोपार्जन पर प्रशिक्षण कार्यशाला

संवर्धन, वनीकरण तकनीकें, आपदा प्रबन्धन में वानिकी की भूमिका, वन अग्नि न्यूनीकरण तथा प्रबन्धन, शहरी क्षेत्रों में वन अग्नि के जोखिम, जलवायु परिवर्तन अनुकूलन में आजीविका के रूप में वानिकी, पॉपलर पौधशालाओं का अनुरक्षण, सुगंधित तेल, खुशबू तथा गंध चिकित्सा, अकाष्ठीय वन उत्पादों को कृषि वानिकी उत्पादों तथा बाजार नियंत्रण से जोड़ना, सुअवसर तथा आशंकायें, मुख्य वन वृक्षों की ऊतक संवृद्धि, बांस तथा औषधीय पादप, पौधशाला तथा कृन्तक प्रौद्योगिकी, जैव–उर्वरक उत्पादन तथा पौधशाला और कार्यक्षेत्र में अनुप्रयोग, जैव सम्भावनायें – राज्य वन विभागों की भूमिका, वन आनुवंशीय संसाधन प्रबन्धन, अनुसंधान पद्धतियां तथा अनुसन्धान प्रलेखों का लेखन, "अगरबत्ती" की सीकें बनाना, जीवन्त बांस से जीवविज्ञानीय बाड़ बनाना, वर्षा जल रोकथाम तथा निम्नीकृत पहाड़ियों में वनीकरण और पुनर्स्थापन, नाजुक रेगिस्तानी पारि–पद्धति के निरंतर विकास के लिए संयुक्त प्रयास, वन उत्पादकता बढ़ाने के लिए अनुसन्धान आवश्यकतायें तथा प्रौद्योगिकी का अनुप्रयोग, संरक्षण, उपयोजन तथा महत्वपूर्ण शीतोष्ण औषधीय पादपों की खेती आदि का आयोजन भा.वा.अ.शि.प. मुख्यालय तथा उसके संस्थानों द्वारा किया गया, जो इस प्रकार है :

मुख्यालय / संस्थान	प्रशिक्षण की संख्या	अवधि (दिनों में)
भा.वा.अ.शि.प., देहरादून	3	12
व.अ.सं., देहरादून	32	151
व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर	12	47
का.वि.प्रौ.सं., बैंगलोर	2	4
उ.व.अ.सं., जबलपुर	12	63
व.अ.मा.सं.वि.कें., छिंदवाडा	13	16
शु.व.अ.सं., जोधपुर	5	12
हि.व.अ.सं., शिमला	8	14
व.व.अ.सं., जोरहाट	15	48
व.उ.सं., रांची	8	20
व.जै.सं., हैदराबाद	2	5
कुल	112	392

बांस हस्तशिल्प एवं फर्नीचर प्रदर्शन एवं प्रशिक्षण

भा.वा.अ.शि.प. संस्थानों द्वारा आयोजित प्रशिक्षणों की झलकियां